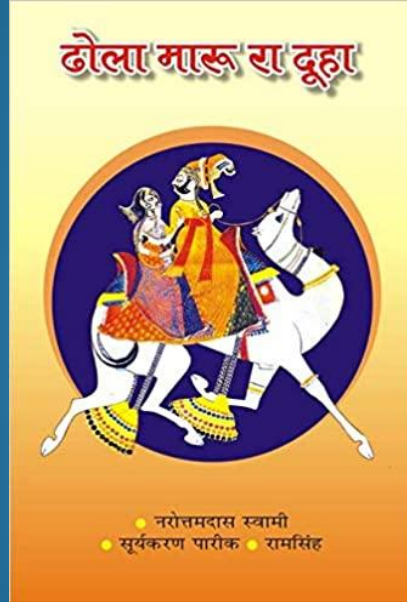


डॉ. नवीन नन्दवाना
हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)



ढोला मारू रा दूहा

मारवणी का संदेश - 110

नरवर देश सुहाँमणउ, जइ जावउ पहियाह।

मारू तणा सँदेसड़ा, ढोलइन्ू कहियाह॥ 110

- **भाव-**

नरवर देश सुहावना है। हे पथिकों, यदि तुम वहाँ जाओ तो मारवणी के सँदेस ढोला को कहना।

मारवणी का संदेश - 111

संदेसा ही लख लहइ, जउ कहि जाणइ कोइ।
ज्यँ धणि आखइ नयण भरि, ज्यँउ जइआखइ सोइ॥

- भाव-
- संदेसों से ही मन की दशा जानी जा सकती है, यदि कोई कहना जाने—जिस प्रकार प्रेयसी आँसुओं से आँखें भरकर कहती है उसी प्रकार यदि वह कहे।

मारवणी का संदेश – 112

ढाढी, एक सँदेसड़उ, प्रीतम कहिया जाइ।

सा धण बळि कुइला भई, भसम ढँढोलिसि आइ॥

- भाव-
- हे ढाढी, जाकर प्रियतम से एक सँदेसा कहना- तुम्हारी वह प्रेयसी जलकर कोयला हो गई है, तुम आकर उसकी भस्म को ढूँढना।

मारवणी का संदेश – 113

ढाढी, जे प्रियतम मिलइ, यूँ कहि दाखवियाह।
पंजर नहिं छइ प्राणियउ, थाँ दिस झळ रहियाह॥

- भाव-
- हे ढाढी, यदि प्रियतम मिले तो इस प्रकार कहना—
उसके पंजर में प्राण नहीं है, केवल उसकी लौ तुम्हारी
ओर जल रही है।

मारवणी का संदेश - 114

पंथि, एक संदेसड़उ, भल माणस नइ भखख।

आतम तुम पाइस अछइ, ओळग रूड़ा रखख॥

- भाव-
- हे पथिक, एक सँदेसा उस भलेमानुस को कहो- उसकी आत्मा तुम्हारे पास है उसके शरीर को चाहे तुम दूर भले ही रखो।

मारवणी का संदेश - 115

ढाढी, जे राज्ज्यँद मिलइ, यूँ दाखविया जाइ।

जोबण हस्ती मद चढ्यउ, अंकुस लइ घरि आइ॥

- भाव-
- हे ढाढी, यदि राजन मिलें तो जाकर यों कहना-
यौवनरूपी हाथी मदोन्मत्त हो गया है, तुम अंकुश
लेकर आओ।

मारवणी का संदेश - 116

ढाढी जे साहिब मिलइ, यू दाखविया जाइ।
आँख्याँ सीप विकासियाँ, स्वाति ज बरसउ आइ॥

भाव-

हे ढाढी, यदि स्वामी मिलें तो जाकर यों कहना—आँख
रूपी सीपियाँ विकसित हुई है (तुम्हारी प्रतीक्षा में खुल
रही हैं), हे स्वाति, तुम आकर बरसो।

मारवणी का संदेश - 117

- ढाढी, एक सँदेसइउ, कहि ढोला समझाइ।

जोबण आँबउ फलि रहयउ, साख न खाअउ आइ।।

- भाव-

- हे ढाढी, एक सँदेसा ढोला को समझाकर कहना-
यौवनरूपी आम्र फल रहा है, आकर उसकी फसल क्यों
नहीं खाते ?